

rup. 24, 20; पृक्ते ebend.; पृच्छति (?) 34, 2). अपृक्क्याम् अपृक्क, पृचान, पृचै-
चानं, पृचीमहि; pass. पृच्यते, पृक्ते. 1) *mengen, mischen, in Verbindung
setzen*: पृच्छतीर्मधुना पर्यः RV. 1, 23, 16. पृच्छं क्वीपि मधुना 2, 37, 5. 9, 97,
14. AV. 5, 1, 9. ÇĀṆKH. ÇR. 14, 22, 19. मधो पृच्छे नद्यः AV. 6, 12, 3. विषे
विषमपृक्क्याः 7, 88, 1. अद्भिः सोम पृचानस्य ते रसः RV. 9, 74, 9. VS. 10,
4. अमुना ते अमुः पृच्यताम् 20, 27. स्थालीपाके पृक्तान्यभ्राति KAUC. 13.
ऐन्द्रेण कृविषा तत्र कृविः पृक्तं अकृस्पतेः VĀJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 47,
b, 11. 13. अपृष्णधनुषा शरम् BHATT. 6, 39. दयितमूर्त्येव पृक्ता तनुः (जूटाहेः)
verbunden RĪGĀ-TAR. 4, 1. (पवनः) पृक्तस्तुपौरिगिरिनिकराणाम् RAGH. 2,
13. (पृक्ते) द्रावपि मयूषपृक्तेा sich berührend VARĀH. BRH. S. 17, 3. काद-
म्वा जलपृक्ताः so v. a. auf dem Wasser schwimmend R. 4, 51, 39. Vgl.
अपृक्त. — 2) *füllen, sättigen*: धन्वान्यद्भिः अपृष्णकृष्णानाम् RV. 4, 19, 7.
पृच्छति सु वा पृचैः 5, 74, 10. तमितृष्णति शर्वसात राया 6, 15, 11. 1, 83, 1.
देवो देवान्स्वेन रसेन पृच्छन् 9, 97, 12. पृष्णति रोदसी उभे 10, 140, 2. प्रुक्ते-
ण देव देवताः पिपृग्धि VS. 19, 5. (लोकाः) मधुच्युतो घृतपृक्ताः erfüllt von
MBh. 1, 3659. (गदाम्) पृक्ता गतमदैरिव 9, 581. क्रत्वा यदस्य तविषीषु
पृच्छते sich füllen (?) RV. 1, 128, 5. — 3) *in Fülle geben, Etwas (acc. oder
gen.) Jmd (dat.) reichlich schenken*: नूनैः पृच्छं रयिम् RV. 6, 68, 3. 8, 5, 36.
पृच्छं वाजस्य 7, 93, 2. गव्यां पृच्छतो अश्या मघानि 67, 9. दत्तं पृच्छतम् 8, 24,
14. 10, 140, 4. इयं पृच्छता सुकृते 1, 47, 8. पृचो यथा नः सुवितस्य भूरेः 7,
100, 2. भगं दत्तं न पृचामि धर्मासिम् 1, 141, 11. — 4) *mehren*: पृच्छति सो-
मं न मिनाति वृत्ततः RV. 10, 94, 13.

— अनु, partic. अनुपृक्त *vermisch mit* MBh. 1, 3609. 3613.

— अपि *beimischen*: विषे विषमप्रागपि AV. 10, 4, 26. पृच्छति 5, 2, 3
fehlerhaft für वृच्छति.

— आ 1) *erfüllen, durchdringen*: आ वा पृष्णन्तिन्द्रियं रजः सूर्यो न
रश्मिभिः RV. 1, 84, 1. TBr. 2, 7, 8, 2. — 2) *med. sich sättigen*: एमिया
पृचीमहि RV. 1, 129, 7. inf.: ते राया ते ह्याशुपृचे सचैमहि सचधैः 5, 30, 2.
वस्त्रो वीरस्यापृचैः 8, 40, 9. — 3) *vermischen, durchmengen*: कृत्वास्या-
न्याभिर्हृग्भिर्महमापृष्णामेति, आपृचुः AIT. Br. 6, 1. — Vgl. आपृक्.

— उप 1) *hinzufügen, mehren*: वीरिषु वीरा उप पृच्छि नस्त्वम् RV. 2,
24, 15. उप तत्र पृच्छीत कृत्ति राज्ञिभिः 1, 40, 8. pass.: उपोपनु मधवन्भूय
इनु ते दानं देवस्य पृच्यते VALABH. 3, 7. उपो मतिः पृच्यते RV. 9, 69, 2. —
2) *sich nahen zu (acc.)*: पौवने शिवानुपृच्छती (so ist die Betonung wohl
zu verbessern) ङरा AV. 18, 4, 50. — 3) *sich mischen so v. a. sich begat-
ten*: उपपृत्ते (inf.) वर्षणा मोदमाना दिवस्पृथा वधो पृच्यच्छं RV. 5, 47, 6.
उपेद्रमुपपृचनमासु गोषूप पृच्यताम् möge die Begattung anschlagen 6, 28,
8; vgl. die v. l. AV. 9, 4, 23. — Vgl. उपपृचन, उपपृच्.

— निस्, partic. निस्पृक्त (sic) MBh. 3, 12503.

— प्र *sich in Berührung setzen mit (acc.)*: प्रपृच्छन्विश्वा भुवनानि पूर्व-
द्यो TBr. 2, 5, 4, 5. वायो तव प्रपृच्छती धेना जिगाति दामृषे RV. 1, 2, 3.

— वि 1) *ausser Berührung bringen, trennen*: विपृचो स्यो वि मा पा-
त्पना पृच्छम् VS. 9, 4, 19, 11. असि सोमेन समया विपृक्तः RV. 1, 163, 3. zer-
theilen, zerstreuen: यं सोमकृपृत्तमसे विपृचै (inf.) 4, 13, 3. — 2) *sich
trennen von (acc.)*: अदित्सोमो वि पृच्यदासुखीन् RV. 4, 24, 5.

— सम् 1) *act. med. mengen, mischen, vereinigen, berühren*; *med.
pass. sich mengen, sich vereinigen, in Berührung kommen*: पृष्णिः संपृच्छे
हरितेन वाचम् RV. 7, 103, 4. त्वन्वा मे त्वन्वै सं पिपृग्धि 10, 10, 11. पिपृ-
IV. Theil.

च्याम् (पृ० AV.) 12. देवो देवेभिः समपृक्त रसम् 9, 97, 1. मघा संपृक्ताः सा-
रुघो धेनवः (Milch) 8, 4, 8. 10, 34, 7. संपृचानः सदेने गोभिर्हृद्भिः 1, 95, 8. सं
नौषीभिः क्रतुभिर्न पृच्छे 10, 93, 9. समी पृच्यते समनेव क्रतुः 1, 103, 1. सं
पृच्यधमतावरीत्रिर्मिणीर्मधुमत्तमाः TS. 1, 1, 3, 1. VS. S. 58. ÇĀṆKH. Br. 7, 4,
ÇR. 8, 9, 4. AV. 6, 64, 1. 74, 1. ÇAT. Br. 3, 2, 4, 9. इहो रिषः संपृचः (inf.)
पाक् सूरिन् vor der Berührung mit RV. 2, 35, 6. TS. 1, 1, 3, 2. स्पन्दनौ
समपृच्यतामुभयोः stiessen zusammen BHATT. 17, 106. संपृक्त *vermisch*.
verbunden, in Berührung gekommen H. 1469. HALĀJ. 4, 56. हरिचन्द-
नसंपृक्तमुदकम् R. 2, 63, 8. चन्दनागुरुसंपृक्त (पवन) 71, 25. संपृक्तं नभसा
ह्यम्भः संपृक्तं नभो ऽम्भसा 5, 74, 34. तेजस्तेजसि संपृक्तम् MBh. 6, 2018. न-
क्तमिव लोहितज्ञः परुषधनच्छेदसंपृक्तः VIKR. 142. वदरीरोक्तीतवृत्ता सं-
पृक्ता चेत् VARĀH. BRH. S. 53, 72. वागर्धविव संपृक्ता (जगतः पितरौ) RAGH.
1, 1. ब्रह्म तत्र च संपृक्तमिह चामुत्र वर्धते M. 9, 322. तावुभौ भूतसंपृक्ता
12, 14. धर्मपापान्याम् 19. — 2) *erfüllen; begaben, beschenken mit; med.
erfüllt —, begabt werden*: मधो देवा श्रोपंधीः सं पिपृक्त RV. 3, 54, 21. 6.
20, 6. तेजसा सं पिपृग्धि मा TBr. 2, 7, 3, 3. 4. रसेन समपृक्तमहि (असृष्टमहि
VS.) AV. 7, 89, 1. संवत्सरे समपृच्यत धीतिभिः RV. 1, 110, 4. मघा संपृक्ता
(अश्विनौ) TBr. 3, 1, 3, 13 in Ind. St. 7, 274. — Vgl. संपर्क.

पर्ज (पृज), पृक्ते, पृच्छे v. l. für पर्च DuĀTOP. 24, 20. v. l. für पिज् 18. Vgl.
अनवपृष्ण (welches der Form nach auf keine andere Wurzel zurück-
zuführen war) und अत्रप्रज्ञान.

पर्जनी = पर्जन्या *Cucumis aromatica Salisb.* oder *C. xanthorrhiza* (s.
दावी) AK. 2, 4, 3, 20. RATNAM. 39.

पर्जन्य UNĀDIS. 3, 103. Hier und da fälschlich पर्जन्य geschrieben. 1)
m. a) *Regenwolke, = रसदब्द, गर्जदम्बुद, धनदम्बुद, गर्जन्मेघ* AK. 3, 4,
34, 148. H. an. 3, 495. MED. j. 90. HALĀJ. 5, 32. = मेघ H. 164. UGĒVAL.
= मेघशब्द H. an. MED. (मरुतः) वि पर्जन्यं सृजति रोदसी अनु RV. 5, 53,
6. भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः 1, 164, 51. दिवा चित्तमः कृ-
एवति पर्जन्येनोदवाक्तेन। यत्पृथिवी व्युदृत्ति 38, 9. 14. AV. 10, 10, 7. VS.
18, 55. यत्तु नद्यो वर्षतु पर्जन्याः TS. 2, 7, 10, 4. पर्यन्यनिन्द R. 6, 31, 32.
प्रवृद्ध इव पर्जन्यः चातकेरभिनन्दतः RAGH. 17, 15. पर्जन्यस्य यथा धाराः —
संख्यया परिचरिताः PAṆĀT. 116, 7. III, 210 (vgl. 190, 6). सूर्येन्दुपर्जन्य-
समीरणानां योगः VARĀH. BRH. S. 45, 46. अत्राद्भवति भूतानि पर्जन्यादन्न-
संभवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः || so v. a. Regen BHAG. 3, 14.
Ausserdem lassen sich manche der u. b. aufzuführenden Stellen, wie
gewöhnlich die Götternamen dieser Art, auch appellativisch fassen. —
b) *personif. der Regengott, ein Donnerer und Befruchter*; vgl. beson-
ders RV. 5, 83. 7, 101. 102. NAIKH. 5, 4. Nir. 10, 10. = इन्द्र AK. H. 172.
H. an. MED. HALĀJ. 1, 52. पर्जन्यावाता RV. 6, 50, 12. 49, 6. 10, 65, 9. 66,
10. अग्नीपर्जन्यौ 6, 52, 16. वाचं पर्जन्यश्चित्रा वदति विषीमतीम् 5, 63. 6.
पर्जन्यो न श्रोपंधीभिर्मयोभुः 6, 52, 6. मृद्धा इन्द्रो य श्रोत्रसा पर्जन्यो वृष्टिमा
इव 8, 6, 1. 4, 57, 8. 7, 35, 10. पर्जन्यं इव ततन्दि वृष्ट्या सरुत्तमयुता हर्दत्
8, 21, 18. 9, 2, 9. 22, 2. 82, 3. 10, 66, 6. 98, 1. 8. 169, 2. AV. 1, 2, 1. 3, 1. 3,
21, 10. 31, 11. 4, 11, 4. 15, 4. 6. 6, 4, 1. 38, 3. 8, 7, 21. 12, 1, 12. VS. 22, 22.
शं नः कनिक्कदेवः पर्जन्यो अभि वर्षतु 36, 10. S. 59, 15. संततवर्षी ह प्र-
ज्ञान्यः पर्जन्यो भवति, जाम्भूतवर्षी u. s. w. AIT. Br. 2, 19, 3, 18. TS. 1, 6,
10, 5. 2, 1, 3, 3. 3, 4, 3, 2. पर्जन्यात्मन् adj. 5, 8, 1. 5, 2, 3, 2. — ÇAT. Br. 3, 3,
4, 11. 6, 1, 3. 15. 7, 3, 1. 2. 5, 3, 37. 8, 6, 2, 20. 14, 3, 3, 9, 4, 14. ÇĀṆKH. Br.